8

# मसीह की भरपूरी का पौलुस का चित्र, 1

## कुलुस्सियों 2:8, 9

अपने पत्र के आरम्भ में कुलुस्सियों के नाम अभिवादन या सलाम लिखने के बाद पौलुस ने उन्हें यीशु की महानता और उसके द्वारा उन्हें मिलने वाली आत्मिक शुद्धता की बात बताई पौलुस उनके लाभ के लिए यीशु की अपनी निजी सेवकाई का उल्लेख करके उन्हें प्रोत्साहित करना चाहता था। बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार मसीह में पाए जाते हैं इस कारण उसने उन्हें अन्य शिक्षकों के पीछे चलने के विरुद्ध चौकस किया।

इस सामग्री का आधार देने के बाद जिस पर बनाना आवश्यक था, पौलुस यीशु के महत्व पर ज़ोर देने के लिए आगे बढ़ा। कुलुस्से के लोग उस में सम्पूर्ण थे, क्योंकि उसके द्वारा उनका पापपूर्ण अतीत मिट गया था। वे आत्मिक रूप में मरे हुए थे पर अब वे जीवित थे और उन्हें क्षमा किया गया था क्योंकि उन्होंने बपतिस्मे में यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान को साझा किया था। यीशु ने उनके नये जीवनों को चलाना था; उन्हें अपने आपको उसे सौंपना था क्योंकि उसने उनके अपराधों को क्षमा कर दिया था और उस व्यवस्था को जो उनके विरोध में थी हटा दिया था। उन्हें व्यवस्था के आदेशों को मानने की आवश्यकता नहीं थी जिसे उसने बीच में से हटा दिया था; न ही उन्हें सांसारिक नियमों को मानने की आवश्यकता थी, जिनका आत्मिक रूप में बढ़ने के लिए कोई काम नहीं हुआ।

### मनुष्यों की शिक्षाओं के द्वारा अहेर न बनने की चेतावनी (2:8)

**[8]चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं।**

**''चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान के द्वारा अहेर न कर ले'' 2:8**

यह पुष्टि करने के बाद कि यीशु वह पक्की नींव है जिस पर कुलुस्सियों ने अपना विश्वास बनाया था। आयत 7 में, पौलुस उन्हें यह चेतावनी देने के लिए आगे बढ़ा कि कोई उन्हें अन्य शिक्षाओं से गुमराह न करे। **चौकस रहो ...** (*blepete*, मूलतया ''देखो'')[1] लिखकर पौलुस चेतावनी का झण्डा खड़ा कर रहा था। आकर्षित शिक्षाओं के द्वारा भटक जाने और अहेर बना लिए जाने का खतरा बहुत वास्तविक था।

**कोई** यूनानी शब्द *mē tis* का अनुवाद है जिसका अर्थ आम तौर पर कोई अनाम व्यक्ति

या लोग होते हैं। KJV में कई मामलों में इसका अनुवाद ''कई'' हुआ है (उदाहरण के लिए मत्ती 9:3)। पौलुस को शायद पता था या उस पर प्रकट किया गया था कि कुलुस्से के समुदाय में कई शिक्षक मण्डली के लोगों को सांसारिक ज्ञान की शिक्षा के द्वारा सच्चाई से दूर करने के प्रयास में थे।

अहेर (*sulagōgeō*) बनाने का अर्थ कैदी के रूप में नहीं करना था। नये नियम में यह शब्द केवल यहीं का है। मूल अर्थ ''लूट के रूप में ले जाकर काबू में करना, *बंदी बनाना, लूटना, ...* किसी को सत्य [से] हटाकर लूट की दासता में ले जाने के रूपक में'' है।[2] ए. टी. रॉबर्टसन ने इस शब्द के लिए कहा है, ''यह क्रिया शब्द बहुत कम मिलता है, जो केवल यहां और बाद के लेखकों में है। हेलियोडोरस ने इसे किसी आदमी की बेटी को उठा ले जाने [अपहरण करने] के लिए अरिस्टेनेटुस ने घर लूटने; लियेटस ने नौकरानी से दुष्कर्म करने के लिए किया है।''[3]

कुलुस्सियों को अंधकार की शक्ति और दासता में से निकालकर लाया गया था (1:13), जो कि पाप के अंधकार से छुटकारा था। पौलुस उन्हें दासता में वापस जाकर न लुटने को कह रहा था। वह नहीं चाहता था कि वे अपने पुराने मार्गों से बहकाए जाएं या झूठ के नये स्रोतों में फंसें। यीशु से दूर जाने के बहकावों से झूठे शिक्षकों को रोकने के लिए उन्हें सावधान रहना आवश्यक था।

पौलुस ने उन्हें **तत्व ज्ञान** (*philosophia*) अर्थात ''बुद्धि के प्रेम'' के विरुद्ध सावधान किया। यह यूनानी शब्द नये नियम में केवल यहीं पर मिलता है। पौलुस यह नहीं कह रहा था कि फ़िलॉसफ़ी हमेशा बुरी होती है। यूनानियों में इस शब्द का इस्तेमाल बुद्धि के लिए प्रेम के कारण सत्य या बुद्धि को पाने के मनुष्य के बेहतरीन प्रयासों के लिए किया जाता है। सबसे पहले इसका इस्तेमाल अच्छे अर्थ में किया जाता था। यह दिखाकर कि जैसे कोई सिद्ध बुद्धि को पा चुका हो, शेखी मारने और अपने आपको बुद्धिमान बताने के बजाय यूनानी लोग अपने आपको केवल ज्ञान के प्रेमी कहते थे।

सिकन्द्रिया के क्लेमेंट जैसे आरम्भिक लेखक यह तर्क देने को तैयार रहते थे कि पौलुस हर प्रकार की फ़िलॉसफ़ी को गलत नहीं कह रहा था।[4] फिलो ने वास्तविक फ़िलॉसफ़ी की प्रशंसा की, परन्तु उसने अपनी भाषण कला से सच्चाई को बिगाड़ देने वालों की भर्त्सना की।[5]

तीमुथियुस को लिखते हुए पौलुस ने ''जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, उसके अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातों से परे'' रहने की चेतावनी दी (1 तीमुथियुस 6:20)। उसने कुलुस्सियों को मानवीय समझ पर आधारित शिक्षा को मानने के बजाय मसीह की समझ पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित किया। वह आम फ़िलॉसफ़ी को नहीं बल्कि उसी को गलत हर रहा था जो मसीह की शिक्षा के उलट थी। काफ़िर और यहूदी पाठशालाओं की उस समय की फ़िलॉसफ़ी परमेश्वर और संसार के विचारों की शिक्षाओं से सम्बन्धित थी, जिनमें से अधिकतर मसीही शिक्षा के उलट थीं। फिलॉसफ़र उन शिक्षाओं को बता रहे थे जो विश्वास के लिए विनाशकारी थे।

एपिकूरी और सतोइकी दार्शनिकों ने बाज़ार में और अथेने में अरियुपगुस में पौलुस के साथ वाद विवाद किया (प्रेरितों 17:18, 19)। इन लोगों की सोच ईश्वरीय प्रकाशन के बजाय मानवीय समझ पर आधारित थी।

**''और व्यर्थ धोखे'' ( 2:8 )**

''तत्व ज्ञान'' का सम्बन्ध बड़ी नज़दीकी से व्यर्थ धोखे[6] (*kenēapatē*) से है। यूनानी भाषा में *philosophia* और *apatē* से पहले केवल एक उपपद लगता है। दोनों में किसी से भी पहले उपसर्ग नहीं है। इस वाक्यांश का अनुवाद ''व्यर्थ मानवीय शोद्ध की काल्पनिक फ़िलॉसफ़ी'' या ''फ़िलॉसफ़ी, निरा व्यर्थ धोखा।''

पौलुस भ्रमित करने वाली बौद्धिक अनुमान की निंदा कर रहा था जो कपट भरे ढंग से बेकार था और झूठ पर टिका था परन्तु आकर्षित करने वाला मानवीय तर्क था। ऐसी फ़िलॉसफ़ी में सच्चाई, भीतरी सामर्थ, आशा और अनन्त जीवन नहीं था। यह भ्रमित करने वाली थी क्योंकि इसका आकर्षण इसकी व्यर्थ, विनाशकारी प्रकृति को ढांप सकता था। पौलुस भाइयों को सच्ची बुद्धि और मसीह में जीवन से दूर न होने की चेतावनी दे रहा था।

बुद्धि की अपनी खोज में फ़िलॉसफ़र या दर्शनिक ईश्वरीय प्रकाशन पर नहीं बल्कि केवल मानवीय तर्क पर निर्भर थे। पौलुस ने इस समस्या को इसी तरह से समझाया: ''क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे'' (1 कुरिन्थियों 1:21)। झूठे शिक्षक सच्चाई को दूषित करके लोगों को भटका रहे थे। झूठ में आम तौर पर इतना सच होता है कि यह आकर्षक लगे और इसका झूठ छिप सके। कई झूठी शिक्षाओं में इतना झूठ होता है कि वे खतरनाक और नरक में भेजने के लिए काफ़ी होती है।

यीशु ने प्रेरितों को सत्य दिया (यूहन्ना 1:17), जिन्हें पवित्र आत्मा द्वारा सब सत्य में अगुआई दी जानी थी (यूहन्ना 16:13)। काल्पनिक फ़िलॉसफ़ी के द्वारा यीशु की शिक्षा को मानने के बजाय मसीही लोगों को वचन का बड़ा सम्मान करते हुए विनम्रता पूर्वक इसे मान लेना चाहिए। परमेश्वर के संदेश को समझने के हमारे सच्चे परियास में हमें पूर्व धारणा से मुक्त होने का प्रयास करना आवश्यक है। वचन में मानवीय सोच को पढ़ने की कोशिश करने के बजाय हमें परमेश्वर की बुद्धि को ढूंढ़ना आवश्यक है।

**''मनुष्य की परम्परा के अनुसार'' ( 2:8 )**

**परम्परा** (*paradosis*) वह होती है ''जो आगे सौंपी जाती है,'' जैसे शिक्षाएं और रीतियां। परम्परा अच्छी या बुरी हो सकती है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि यह किससे मिली है। यदि कोई शिक्षा परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए शिक्षक के द्वारा परमेश्वर की ओर से सौंपी गई है तो यह अच्छी है। परन्तु यदि इसे देने वाला कोई व्यक्ति है तो यह बुरी हो सकती है। परमेश्वर की शिक्षा का विरोध करने वाली किसी भी बात का इनकार किया जाना आवश्यक है।

1 कुरिन्थियों 11:2 में पौलुस ने कुरिन्थियों को उन परम्पराओं को मानने के लिए जो उन्हें उससे मिली थीं, सराहा। उसने थिस्सलुनीकियों को किसी ऐसे भाई को जो परम्परा को नहीं मानता (2 थिस्सलुनीकियों 3:6) निकाल देने को कहा और उन्हें उन परम्पराओं को जो उसने उन्हें बताई थीं ध्यान से मानने को कहा (2 थिस्सलुनीकियों 2:15)। ये अच्छी परम्पराएं थीं क्योंकि ये परमेश्वर की ओर से दी गई थीं।

जिन परम्पराओं को ठुकराया जाना आवश्यक है उन में यहूदी, काफ़िर और कोई भी

मानवीय परम्परा है जो परमेश्वर की परम्परा से उलट हो। यहूदियों ने यीशु को यहूदी पूर्णियों की परम्पराओं का उल्लंघन करने के लिए डांटा था। उसने उन्हें यह बताते हुए उत्तर दिया था कि उनकी परम्पराएं परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन थीं और उन्हें नकारा कर देती थीं (मत्ती 15:2-6; मरकुस 7:3-13)। मनुष्य की आज्ञाएं परमेश्वर की आराधना में व्यर्थ हैं (मरकुस 7:7)। पौलुस यहूदी परम्पराओं को मानने में बड़ा जनूनी था (गलातियों 1:14)। पतरस ने उन लोगों के सम्बन्ध में जो रोमी सरकार के पूर्वी क्षेत्र में फैले हुए थे पूर्वजों की परम्पराओं की बात की (1 पतरस 1:1, 18)। ये परम्पराएं लोगों को परमेश्वर के साथ सीधे नहीं कर सकती थीं।

पौलुस द्वारा कुलुस्सयों को दी गई चेतावनी यह थी कि वे मनुष्यों की परम्पराओं के द्वारा मसीह से दूर न हो जाएं। यीशु ने चेलों को उन्हें जिन्होंने बपतिस्मा दिया था उन सब आज्ञाओं को मानने की शिक्षा देने को कहा, जो उसने उन्हें दी थी (मत्ती 28:20)। कोई भी और शिक्षा और आज्ञा मनुष्य की ओर से होनी थी न कि मसीह की ओर से। ऐसी आज्ञाओं को ठुकरा दिया जाना आवश्यक है (तीतुस 1:14)।

प्रधान याजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु से एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा: ''वह मन्दिर में जाकर उपदेश कर रहा था, कि महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने उसके पास आकर पूछा, तू ये काम किस के अधिकार से करता है? और तुझे यह अधिकार किस ने दिया?'' (मत्ती 21:23)। उत्तर में यीशु ने उन से पूछ लिया कि यूहन्ना का बपतिस्मा ''स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से था?'' (मत्ती 21:25)। यीशु की इच्छा को तय करने की कोशिश में हमें किसी रीति के सम्बन्ध में तीन प्रश्न पूछने चाहिएं: ''हम इसे किस अधिकार से कर रहे हैं?'' ''इसे करने का अधिकार किसने दिया?''; और ''यह स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से?''

यीशु की शिक्षा प्रतिबंधक है यानी धार्मिक रीतियां उसकी आज्ञाओं से सीमित होनी आवश्यक हैं। मनुष्यों द्वारा आरम्भ की गई परम्पराओं के बजाय मसीही लोगों को केवल उन्हीं रीतियों को मानना चाहिए जो यीशु ने बताई और किसी दूसरी शिक्षा को नहीं मानना चाहिए (1 तीमुथियुस 1:3; 6:3, 4)। किसी और सुसमाचार को सिखाने वाले लोग श्रापित हैं (गलातियों 1:7, 8)। जब यीशु ने किसी बात को पसन्द किया है तो मसीही लोगों को इसका इस्तेमाल करना चाहिए। हमें प्राथमिकता की छूट केवल उन्हीं बातों में है जहां यीशु ने अपनी पसन्द नहीं बताई है।

### ''संसार की आदि शिक्षा के अनुसार'' (2:8)

पौलुस ने **संसार की आदि शिक्षा** (*stoicheia tou kosmou*) अर्थात संसार के लोगों द्वारा बनाए गए गैर-मसीही नियमों के सम्बन्ध में भी चेतावनी दी। इस वाक्यांश पर जो आयत 20 के शब्दों और गलातियों 4:3, 9 के शब्दों जैसा है, विवाद खड़ा हो गया है। यूनानी भाषा में ''आदि शिक्षा'' का एक संज्ञा शब्द है *stoicheia* नये नियम के अन्य हवालों में इस शब्द का इस्तेमाल मसीहियत की मूल शिक्षाओं (इब्रानियों 5:12) और तत्वों के लिए है जिनसे भौतिक वस्तुएं बनती है (2 पतरस 3:10, 12) के दो अर्थों में किया गया है। इन शब्दों का अर्थ किसी भी बात के मूल तत्व हो सकता है, उदाहरण के लिए वर्णमाला के अक्षर।

''संसार की आदि शिक्षा'' के अर्थ के सम्बन्ध में चार बड़े सुझाव दिए गए हैं। (1) पौलुस

के कहने का अर्थ संसार में पाए जाने वाले बुराई के तत्व थे, जैसे भूत और दुष्टात्माएं या स्वर्गदूत जो संसार को संचालित करते हैं।[7] (2) उसके कहने का अर्थ अकाशीय पिंड था जो मनुष्य के मामलों को प्रभावित करते हैं। यूनानी लोग आत्माओं को अग्नि, वायु, पृथ्वी और जल से संचालित होने के साथ जोड़ते थे। वे तारों के साथ संसार के इन चार तत्वों की आत्माओं की पूजा करते थे। (3) पौलुस जीवन के अर्थ के साथ-साथ संसार के आरम्भ और बनावट के सम्बन्ध में गैर-मसीही विचारकों के विश्वदर्शन की बात कर रहा था। (4) पौलुस के मन में आत्मिक समझ से वंचित लोगों द्वारा बनाए गए बुनियादी और विनेधात्मक नियमों की बात थी। यहूदियों और अन्यजातियों द्वारा बनाए गए नियमों और कायदों को मानना परमेश्वर की ओर से आशिषें पाने के लिए आवश्यक माना जाता था।

सुझाए गए चार अर्थों में से चौथा अर्थ सबसे सराहनीय है। ''संसार की शिक्षा'' से पौलुस का अभिप्राय समझना वह बुनियादी शिक्षा थी जो परमेश्वर के प्रकाशन के बजाय सांसारिक बुद्धि पर आधारित थी (1 कुरिन्थियों 1:20, 21)। आगे पीछे का संदर्भ इस वाक्यांश को स्पष्ट नहीं करता है इस कारण इसका अर्थ अवश्य ही बाद में कुलुस्सियों 2:14, 16, 18, 21-23 में मिलेगा। इन आयतों में पौलुस की चिंता यहूदी और काफ़िर परम्पराओं के साथ-साथ व्यवस्था की थी। व्यवस्था केवल नई वाचा की भूमिका के लिए दी गई थी (गलातियों 3:24, 25), जिस ने जीवन के उच्च आत्मिक अर्थ को प्रकट किया। मसीह की शिक्षा की तुलना में अन्यजातियों की समझ अति सरल थी। उसने जीवन का उत्तम ढंग प्रस्तुत किया और बताया कि परमेश्वर के साथ निजी सम्बन्ध कैसे बनाया जाए। एक मसीही के लिए यहूदी या काफ़िर ढंग से जीने की कोशिश करने का अर्थ विश्वविद्यालय को छोड़कर प्राथमिक स्कूल में वापस जाने जैसा होना था। पौलुस यीशु की उच्च शिक्षा के बजाय अज्ञानी, बचकाना और भ्रमित शिक्षा को मानने के विरुद्ध चेतावनी दे रहा था।

**''मसीह के अनुसार नहीं'' ( 2:8 )**

पौलुस ने यह लिखते हुए कि मसीह में ''बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं'' (2:3)। केवल यीशु के पीछे चलने की आवश्यकता का आधार बना दिया। आयत 8 में उसने नकारात्मक और फिर सकारात्मक बात बताई। उसने कुलुस्से के लोगों को मानवीय बुद्धि और रीतियों के बजाय यीशु की आज्ञा मानने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके पास एक पसन्द थी। वे या तो यीशु के पीछे चल सकते थे या भ्रमित फ़िलॉसफ़ी, मनुष्य की परम्पराओं और बचकाना अनुमानों से चल सकते थे, जो मसीह की ओर से नहीं थे। यदि वे इनके द्वारा चलते तो उन्होंने मसीह के साथ अपनी निष्ठा खो देनी थी और उससे मिलने वाली आशिषों से वंचित होकर बंधी बन जाना था। पौलुस ने इस बात पर ज़ोर दिया कि केवल एक ही पसन्द सही है कि मनुष्यों की बनाई किसी भी परम्परा को मानने के बजाय मसीह के पीछे चला जाए। उन नियमों, शिक्षाओं और रीतियों को मानने के लिए जो मसीह की ओर से नहीं हैं किसी को भी परमेश्वर की ओर से अधिकार नहीं है।

## मसीह में ईश्वरत्व का वास (2:9)

**[9]क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।**

**''क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।'' (2:9)**

आयतें 8 और 9 में 1:15-19 और 2:3 में आरम्भ की गई बातों में जोड़ा गया था। पौलुस यह सुनिश्चित करना चाहता था कि कुलुस्से के लोगों को यीशु की शिक्षा तक अपनी सोच को प्रतिबन्धित करने का महत्व समझ आ जाए।

*क्योंकि* का इस्तेमाल करके पौलुस ने आयत 9 में **ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता** को दूसरे वाक्यांश ''मसीह के अनुसार नहीं'' के साथ जोड़ दिया। मनुष्यों की शिक्षा के बजाय यीशु की मानने का *कारण* इसी पर आधारित है कि यीशु कौन है। यदि वह ईश्वरत्व है और उसमें ईश्वरत्व की सारी विशेषताएं हैं, तो उसकी सिखाई हर बात सच है और अधिकारात्मक है। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता (इब्रानियों 6:18), इस कारण उसकी शिक्षा सच्ची है। कोई भी शिक्षा जो यीशु की प्रकट की गई सच्चाई से मेल नहीं खाती है वह झूठी है (1 यूहन्ना 2:21) और उसे यीशु के अधिकार का समर्थन नहीं है।

1:19 में बताया गया ''परिपूर्णता'' हो सकता है कि इस आयत वाला न हो। वहां पर पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने मसीह में ''वास करने के लिए'' (*katoiketō*) सारी परिपूर्णता को बनाया। 1:19 में इस अनिश्चित भूतकाल कृदंत का अनुवाद ''वास करना'' करेगा। संकेत देता है कि यहां जिस परिपूर्णता की चर्चा की जा रही है यीशु में वह हमेशा नहीं थी, बल्कि इसका वास समय में कुछ देर के लिए हुआ। अपने देहधारी होने से पहले वह मनुष्यजाति के उद्धारकर्त्ता के रूप में अधूरा था। क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा उसने पाप के बलिदान की मांगों को सम्पूर्ण रूप में पूरा किया (इब्रानियों 5:8, 9)। वह अपने जीवन, शिक्षा और मृत्यु के द्वारा हमारी आवश्यकताओं को पूरा करके मनुष्यजाति के उद्धारकर्त्ता के रूप में सिद्ध बना। इससे सारी परिपूर्णता के लिए उसमें वास करना सम्भव हुआ।

2:9 में पौलुस ''ईश्वरत्व की परिपूर्णता'' की बात कर रहा था जो यीशु में वास करती है। जब वह संसार में आया तो उसने शारीरिक देह को पहनने के लिए अपनी स्वर्गीय देह को उतार दिया; परन्तु उसका अस्तित्व अर्थात व्यक्तित्व, अरिवर्तित ईश्वरत्व ही रहा। पौलुस ने कहा है, ''जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया'' (फिलिप्पियों 2:6, 7)। पृथ्वी पर अपने वास के दौरान मानवीय देह पहनकर वह देहधारी हुआ परमेश्वर बन गया। वह अपने स्वर्गीय शरीर में परमेश्वर नहीं था, परन्तु शारीरिक देह में परमेश्वर था। किसी भी समय में वह परमेश्वर से कम नहीं था, चाहे अपनी स्वर्गीय देह में हो या अपनी सांसारिक देह में।

नये नियम में ''ईश्वरत्व'' (*theotētos, theotēs* से) केवल यही मिलता है। कई संस्करणों में अनुवाद के रूप में ''परमेश्वरत्व'' (Godhead) का इस्तेमाल करके इस शब्द के भाव को समझाया जा सकता है (KJV; NKJV)। जो कुछ भी ईश्वरत्व में है अर्थात ईश्वरीय स्वभाव की बनावट और विशेषताएं वे सब यीशु में पाई जाती हैं। वह पिता और पवित्र आत्मा से न तो छोटे है और न ही बड़ा; बल्कि उसमें बिल्कुल वही समानता पाई जाती है जो ''परमेश्वर''

शब्द में समाहित है दिखाई जाती है। यह विचार इब्रानियों 1:3 में भी दिखाया गया है: ''वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से सम्भालता है: वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा।''

यहां इस्तेमाल हुए *theotēs* और रोमियों 1:20 में इस्तेमाल हुए *theiotēs* में एक महत्वपूर्ण अन्तर लगता है। हरबर्ट एम. कारसन ने इसकी व्याख्या की है:

> इस कारण रोमियों [1:20] पौलुस कह रहा है कि प्रकृति की महिमा परमेश्वर की शांत और सामर्थ की घोषणा है। परन्तु उसने यह नहीं कहा कि प्रकृति परमेश्वर को व्यक्ति के रूप में वैसे प्रकट करती है जैसे वह मसीह में प्रकट हुआ है। परन्तु यहां [कुलुस्सियों 2:9] वह केवल इतना ही नहीं कहना चाहता कि ईश्वरीय गुण मसीह में प्रकट किए गए हैं। बल्कि वह इस बात पर ज़ोर दे रहा है कि मसीह में परमेश्वर का अपना सार वास करता है और उसी कारण वह अनिवार्य परमेश्वरत्व के इस विचार को समझाने के लिए *theotes* शब्द का इस्तेमाल करता है।[8]

यह कहकर कि ईश्वरत्व की परिपूर्णता मसीह में **वास करती है** (*katoikeō*) पौलुस में वर्तमानकाल का इस्तेमाल करते हुए यह संकेत दिया कि यह यीशु में कालांतर में वास करती थी, अब वास करती है और बनी रहने वाली और निरन्तर वास्तविकता के रूप में वास करती रहती है। यही यीशु जो पृथ्वी पर घुमा फिरा अब स्वर्ग में है, उसे ईश्वरत्व का सारा सार और परमेश्वरत्व को पहना दिया गया। पौलुस की बात ने बाद में आने वाले नॉस्टिक विचार को उत्तर देना था कि मनुष्य यीशु के बपतिस्मे के समय आत्मा *keon* मसीह आया और क्रूस आई और छोड़ गया।

यीशु में सिद्धता का अर्थ है कि बोलते और सिखाते समय उसमें परमेश्वर के मन को दिखाया।

> क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बातें नहीं की, परन्तु पिता जिस ने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या क्या कहूं? और क्या क्या बोलूं? और मैं जानता हूं, कि उस की आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिए मैं जो बोलता हूं, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूं (यूहन्ना 12:49, 50)।

पिता ने मनुष्यजाति के लिए सम्पूर्ण प्रकाशन का वाहन बनाकर यीशु के द्वारा उस सब को प्रकट किया जो वह करना चाहता था (इब्रानियों 1:1, 2)।

अपने विशाल आकार और शक्तिशाली अकाशीय पिंडों के साथ और पृथ्वी पर जीवन के विभिन्न रूपों के साथ सृजित संसार परमेश्वर के मन और सामर्थ को दिखाता है (भजन संहिता 19:1; रोमियों 1:20)। परन्तु यीशु ने परमेश्वर को इस प्रकार से दिखाया (यूहन्ना 1:18; 14:9)। जैसे सृष्टि उसे प्रकट नहीं कर सकती थी क्योंकि उसमें पिता का भी स्वभाव पाया जाता है।

पौलुस ने **सदेह** कहा जिस कारण कुछ लोगों ने यह निष्कर्ष निकाल लिया है कि उसका अर्थ कलीसिया है जिसे मसीह की ''देह'' (*sōma*) कहा गया है (1:18)। यहां इसका

अर्थ यह नहीं होगा। ईश्वरत्व की परिपूर्णता कलीसिया में वास नहीं करती है, चाहे कलीसिया को मसीह की ''परिपूर्णता'' कहा गया है (इफिसियों 1:23)। यदि पौलुस के कहने का अर्थ कलीसिया होता तो उसमें ''सदेह'' के बजाय ''देह में'' लिखना था।

अन्यों का तर्क है कि पौलुस के कहने का अर्थ ''तत्व'' या ''वास्तवकिता'' है जैसा कि 2:17 *sōma* का अनुवाद हुआ है। ऐसा लगता है कि वह यीशु को ईश्वरत्व से भरा दिखा रहा था। शारीरिक अर्थ में यह सत्य नहीं हो सकता क्योंकि परमेश्वर बिना शारीरिक तत्व के एक आत्मा है (यूहन्ना 4:24)। पौलुस के कहने का अर्थ यही होगा कि अपने स्वभाव में ही यीशु में वह सब भरा हुआ है कि वह परमेश्वर है। उसमें ईश्वरत्व की परिपूर्ण और सम्पूर्ण वास्तविकता है (इब्रानियों 1:3)।

---

टिप्पणियां

[1]*Blepte* का इस्तेमाल चेतावनी की बात के लिए किया जा सकता है (देखें मत्ती 24:4; मरकुस 4:24; 8:15; 12:38; 13:5, 9, 23, 33; प्रेरितों 13:40; गलातियों 5:15; फिलिप्पियों 3:2; इब्रानियों 3:12)। [2]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000), 955. [3]ए. टी. रॉबर्टसन, *पॉल एंड द इंटेलेक्चुअल्स: द एपिस्टल टू द कोलोसियंस,* संशो. व संपा. डब्ल्यू. सी. स्ट्रिकलैंड (नैशविल्ल: ब्रॉडमैन प्रैस, 1959), 77. [4]क्लेमेंट ऑफ़ एलेक्जेंड्रिया *स्ट्रोमाटा* 1.11; 6.8. [5]फिलो, *द पोस्टेरिटी एंड एक्साइल ऑफ़ केन* 101. [6]यूनानी शब्द का अनुवाद ''धोखा'' मीी 13:22; मरकुस 4:19; इफिसियों 4:22; 2 थिस्सलुनीकियों 2:10; इब्रानियों 3:13; 2 पतरस 2:13 में भी मिलता है। [7]डेविड एम. हे, *कोलोसियंस,* अबिंग्डन न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (नैशविल्ल: अबिंग्डन प्रैस, 2000), 87-88. [8]हरबर्ट एम. कार्सन, *द एपिस्टल्स ऑफ़ पॉल टू द कोलोसियंस एंड फिलेमोन: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 63-64.